गुरुवाणी

हमारी आधुनिक सभ्यता में जितनी तेजी से सत्ता का उन्माद, जोश एवं नशा की प्रवृत्ति का चलन बढ़ा है.....उतनी ही तेजी से मैत्री-भाव, अपनत्व, जीवन की सहजता में कमी होती गयी है।

–पीठाधीश्वर बाबा सिद्धार्थ गौतम राम जी

अघोरेश्वर निनाद

अघोरान्ना परो मंत्रो। नास्ति तत्वम् गुरोः परम्।।

R.N.I.UPHIN-2000/3008 Postal No. VSI-E-01/2013-2015

वर्ष-१४, अंक २२, वाराणसी। रविवार ३० नवम्बर २०१४ ई० सहयोग राशि ४.२५

संतों की पहचान

अनादि काल से ही भारतवर्ष का भूभाग अध्यात्मिक प्रधान रहा है, सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं वर्तमान काल कलियुग में भी संतों का पदार्पण समाज सुधार एवं व्यक्तियों के आत्मकल्याण के मनोरथ को पूर्ण करने के लिये होता आया है; साथ ही साथ प्रत्येक युग में छद्म रूप में भी वेशधारियों का विवरण पर्याप्त उपलब्ध है। जैसे सतयुग में हिरण्यकश्यपु, हिरण्याक्ष, त्रेतायुग में रावण, मारीच, सुबाहु, कालनेमी, सूपर्णखा, द्वापर में पूतना, बकासुर, अघासुर आदि अनेक राक्षसों का विवरण मिलता है, जो समाज में असुर साम्राज्य के विस्तार हेतु सचेष्ट रहे हैं। ठीक उसी क्रम में आज के इस वैज्ञानिक एवं विकासशील युग में भारत की पढ़ी लिखी जनसंख्या का भी अधिकांश प्रतिशत जो थोड़ा शीघ्रातिशीघ्र कष्टों, दुःखों एवं कमियों से छुटकारा चाहता है, इन बहुरूपियों का शिकार हो रहा है। फलतः जनता को बुरे परिणाम भुगतने पड़ रहे हैं। ऐसे में जब हमारी अध्यात्मिक भूख बढ़ती जा रही है, दिन-प्रतिदिन मंदिरों, गिरजाघरों, गुरुद्वारों, मस्जिदों में भीड़ बढ़ती जा रही है तो समाज के प्रबुद्ध वर्ग का यह कर्त्तव्य है कि समाज का मार्गदर्शन भी करें एवं सही रास्ते के चुनाव हेतु उन्हें प्रेरित करें, अन्यथा सांसारिक दुःखों, पीड़ा से व्यथित मनुष्य की पीड़ा दूर होने की बजाय और बढ़ती ही जायेगी, साथ ही अनजाने में सच्चे सन्तों पर भी उगँलिया उठने लगेगी तथा जनता के आस्था एवं विश्वास के साथ आये दिन घात की बातें टी0वी0 चैनलों, समाचार पत्रों एवं अन्य माध्यमों से मिलता रहेगा, यद्यपि जो खरा-खरा सोना है उसके इर्दगिर्द चाहे कितने चमकते हुए कृत्रिम या पालिश लगे धातु बिखेरे हो, कसौटी पर सोना ही खरा उतरता है, बस जरूरत है कसौटी के ज्ञान की। इस असार संसार सागर के क्लेशों से मुक्ति हेतु काशी में भी कई प्रमुख संतों ने अलख जगाया है एवं तद् समय में अपने-अपने तौर तरीकों से लेखनी से, चमत्कार से समाज का पथ-प्रदर्शन कर सच्चे मार्ग को आलोकित किया है। वर्तमान समय में भी सामाजिक पीड़ा के निवारण हेतु मानव तनधारी ब्रह्मअंशभूत संतों की कोई कमी नहीं है, बस कमी है समाज के उन पढ़े लिखे व्यक्तियों की, सरकारी तंत्र में इस कार्यदायित्व के जिम्मेदारी संभालने वाले विद्वान शासकों की एवं लोकतंत्र के स्तम्भ न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका के साथ ही मीडिया की भी है, जो समय रहते जनता को इन तथाकथित ठगों से सावधान नहीं करते एवं पता तब चलता है जब ट्रेन के मुसाफिर जहरखुरानी का शिकार होकर सब कुछ गवाँकर सुधबुध खोकर हतप्रभ हो जाता है। पढ़े लिखे लोगों के दायित्वों को स्मरण कराते हुए स्वामी विवेकानन्द ने कहा है-

"So Long as millions of Indian live in hunger and ignorance, I hold everyone a traitor, who have been educated on their expense pay not a least heed to them." यानी भारत के हम सभी पढ़े लिखे को उन्होंने विश्वासघाती घोषित किया है जो गरीबों के पैसे के बल पर शिक्षित होने के बावजूद उनकी भूख एवं लाचारी पर जरा भी ध्यान नहीं देते। अब सवाल यह है कि पढ़े लिखे लोग भी कैसे पहचान करें ताकि वे स्वयं एवं शेष आबादी भी अनावश्यक झाँसे में न आवे, इसके लिये उन्हें खोज करनी पड़ेगी तथा उनकी अपनी सुरक्षा के साथ ही सामाजिक, अध्यात्मिक, धार्मिक सुरक्षा को भी अक्षुण्ण बनाये रखा जा सके। जैसे बगुले में हंस, उष्मा में सूर्य, पक्षी में मोर, पुष्पों में पारिजात के रंग, ढंग, तेज, शीतलता से ही हम उत्कृष्टता की पहचान कर लेते हैं, उसी प्रकार सन्तों के चुनाव में भी बहुत ही सतर्कता अपेक्षित है, क्योंकि मनीषियों ने कहा भी है कि-

कामी, क्रोधी, लालची इनसे भक्ति ना होय।
भक्ति करे कोई सूरमा जाति, वरण, कुल खोय॥

वर्तमान समय भारतवर्ष के लिए बड़ा ही संक्रमण काल है। एक तरफ तो वैज्ञानिकों द्वारा नित नये प्रयोग एवं राजनेताओं के द्वारा भौतिक विकास की बात चलायी जा रही है, वहीं पर जनकल्याण की ओट के पीछे तथाकथित थोथी तड़क-भड़क एवं आडम्बर वाले ऐसे पोंगा पंथियों की बाढ़ आयी है जो जनमानस को न केवल उद्वेलित कर रहे है, बल्कि नाना प्रकार से पीड़ित दुःखी जनता की आँख में धूल झोंककर अपना उल्लू सीधा करने में माहिर हैं, ऐसे में समाज को सरल सच्ची राह के लिए कौन मार्गदर्शन करेगा? यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है, आये दिन दूरदर्शन पर भी अनेकानेक उपदेशक प्रकट होते हैं, उपदेश देते हैं, मंत्र देते है एवं भ्रमित कर अन्त में रंगे सियार की तरह स्वयं की भी सच्चाई प्रकट कर देते है। क्योंकि यह स्वभाविक है कि लम्बे समय तक जनता जनार्दन को धोखा नहीं दिया जा सकता भ्रमजाल नहीं फैलाया जा सकता। अन्ततः वास्तविकता प्रकट होकर ही रहती है। अतः आज समाज में आवश्यक है कैसे नाप-तौल, सोच-समझ, अनुभव कर सच्चा, सरल मार्ग के पथ प्रदर्शक को अपनाया जाय, उद्विग्न मन को शान्त किया जाय एवं आध्यात्मिक भूख मिटायी जाय।

अस्तु सामाजिक कसौटी पर खरा खरा सोने पाने के लिए हमारी क्या-क्या अवधारणायें होनी चाहिए, कैसे हम अनुभव कर लें कि यही उपयुक्त एवं निरापद मार्ग है, जिस पर हमारी सन्तति भी अग्रसर हो सके। प्रत्येक जागरूक व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि इस अल्प जीवन में चरम सुख को प्राप्त करने के लिए हमें किन मार्गों का अवलम्बन लेना है, कैसे इसका परीक्षण हो ताकि समय व्यतीत होने के पश्चात किसी प्रकार का अफसोस न हो, ऐसे में उपदेशक एवं उनके उपदेशों को सद्यः ग्रहण करना एवं अपने मन, कर्म, वचन से श्रोता द्वारा उसका अनुपालन करना संदेह से परे हो। बड़े ही आसानी से आमजन कह देते हैं कि अमुक के प्रति मेरी अगाध श्रद्धा है, अमुक के प्रति अगाध विश्वास है, परन्तु यह दो शब्द श्रद्धा एवं विश्वास वैज्ञानिक कारकों पर निर्भर करता है, श्रद्धा यानी किसी के प्रति हार्दिक सम्मान से होता है। जैसे कि हम जानते हैं कि हमारे दादा, परदादा, दादी, परदादी एवं अपने माता-पिता के ही हम संतान है यह हमारा निर्विवाद विश्वास है क्योंकि हमारी यह दिमागी उपज नहीं है बल्कि पूरी तरह से प्राकृतिक है। इसमें संशय की गुजांइश ही नहीं है एवं अमुक मेरे माता-पिता, चाचा-चाची, मामा-मामी आदि है, जिसे हम न जानते हुए भी मानते हैं, क्योंकि इन सभी सामाजिक बन्धनों को जानने का कोई वैज्ञानिक हम परीक्षण नहीं करते, बल्कि अपने बचपन से माता-पिता, मामा-मामी, चाचा-चाची के व्यवहार को दृष्टिगत रखते हुए हम मान लेते हैं कि उपर्युक्त सभी अमुक-अमुक मेरे हैं। अतः जो स्थितियाँ जानकारी से परे हैं उन्हें मानने का ही रिवाज समाज में व्याप्त है। अब जहाँ तक श्रद्धा एवं विश्वास को कसौटी पर परखने का प्रश्न है, इसका अनुपालन

शेष पृष्ठ दो पर

गागर में सागर

अघोर को सागर की संज्ञा दी गयी है तथा हमारे समाज में औघड़ संतों द्वारा विभिन्न अवसरों पर बोलचाल की सरल भाषा में कहीं गयी बातें सूक्तियों के रूप में प्रकट होती है। जिनसे ढेरों ढेरों सुगमता का मार्ग प्रशस्त होता है उक्त सूक्तिया प्राकृतिक रूप में मार्गदर्शन करती रहती है, बशर्ते की छोटी-छोटी सूक्तियों को श्रद्धालु, भक्तगण, पाठकगण, दर्शनार्थी अपने जीवन में शत प्रतिशत क्रियान्वित करने का प्रयास करें। परम पूज्य भगवान अवधूत राम जी के द्वारा बर्हिमुख होकर समाज की तत्कालिक आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए सांसारिक झंझावातों के बोझतले दबे मानव मात्र के उद्धार के लिए उन्हें जीवन में राहत देने के उद्देश्य से कहीं गयी इन वाणियों को मनकों की भाँति जो हृदय में अवस्थित कर मनन करते रहते हैं। उन्हें आशातीत सफलता मिलती है। उक्त सूक्तियाँ मात्र उपदेश नहीं है बल्कि कारगर धारदार हथियार की तरह है जिससे विकारों, दुर्गुणों, दुःख, भय का समूल नाश किया जा सकता है एवं मानसिक क्लेशों से हम सदा ही वंचित रहते हैं। औघड़ के किसी एक ही सूक्ति या वाणी का विशद अध्ययन, मनन एवं क्रियान्वयन किया जाय तो जीवन के विभिन्न पहलुओं एवं अनसुलझें समस्याओं का तत्काल समाधान मिल जाता है। जिससे मानव हृदय को शान्ति प्राप्ति होती है। व्यक्ति फलस्वरूप विकास करता है एवं अपने जीने के मकसद को पूरा करता है। दृष्टान्त स्वरूप "पापियों के बढ़ते ऐश्वर्य को देखकर धर्मफल में सन्देह न करें, फाँसी के मुजरिम को पहले भोग सामग्री दी जाती है।" उपरोक्त सूक्ति ही हमारी युवा पीढ़ी में बढ़ते भौतिकता, आपाधापी के सुरसा रूपी लालच एवं मृग तृष्णा के लिये कड़ी सीख है। एक ब्रेक है, लाल सिंगनल है इसका परीक्षण हम स्वयं अपने आस-पास समाज, देश अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर करने के फलस्वरूप पाते हैं कि बड़े-बड़े धनलोलुप, धनपशु, माफियाओं, तस्करों की दुर्दशा उनके जीवन काल में ही कैसे होती है? कल तक समाज के प्रभावी एवं रसूखदार झंडा बरदार जो अल्प समय में ऐन-केन-प्रकारेण गलत साधनों को अपनाकर कुबेर पति कहलाने का शौक रखते थे, वे आज सिखचों के अन्दर सालों से बंद हैं। कुछ की तैयारी भी चल रही है, कुछ यत्न कर किसी प्रकार बाहर होते हैं। पुनः अपने फैलाये जाल में फँसकर कारागार में वापस पर्दापण करते रहने को बाध्य होते हैं। इनका जीवन कौओं, भयभीत सियारों सरीखा हो जाता है। इनके काली कमायी का नाश इनके स्वयं के समक्ष बड़े ही दर्दनाक तरीके से होता है तथा ये बेबस होकर सब कुछ अपनी आँखों से विनष्ट होता देखने को मजबूर होते हैं। विरासत में अपने परिजनों को भी सर्पों से भरा सुनहरा पिटारा थमा देते हैं। जिससे छुटकारा पाना उनके लिये भी प्रायः दुःखदायी ही होता है। इसी प्रकार अन्य सभी सूक्तियों के मनन से जीवन की दशा व दिशा सुधरती है एवं क्लेशों से पूर्णतः मुक्त प्राप्त होती हैं। अस्तु, यहाँ की प्रत्येक सूक्ति गागर में सागर के समान है।

C-अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान् के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक **अरुण कुमार सिंह** द्वारा महादेव प्रेस, बी.3/335, रविन्द्रपुरी कॉलोनी, भेलूपुर, वाराणसी (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक : चन्द्र नाथ ओझा

ग्राफिक्स : आशीष कुमार बरनवाल

☎ **0542-2277155.**
e-mail–neenad@aghorpeeth.org
e-mail–kinaram@rediffmail.com
www.aghorpeeth.org

प्रथम पृष्ठ का शेष

संतों की पहचान

सतर्कतापूर्ण करने पर सफलता मिलती है। केवल किसी तथ्य के सिद्धान्त को जानकर ही आत्म कल्याण नहीं हो सकता जबतक कि व्यवहारिक ज्ञान से व्यक्ति संतृप्त न हो अब जैसे किसी चिकित्सा विज्ञान अथवा इंजीनियरिंग के छात्र को केवल सिद्धान्त बता दिया जाय तो कल वह शल्य चिकित्सा अथवा कोई उपकरण कैसे कारगार कर व्यवहार में प्रयुक्त कर सकता है जब तक कि उसे व्यवहारिक ज्ञान से आच्छादित न कर दिया जाय, इसीलिये चिकित्सा छात्रों के लिए अस्पताल, अभियंताओं के लिये वर्कशाप का होना अत्यावश्यक है। तभी जाकर सम्पूर्ण लाभ होगा, जो समाज के काम आता है। सिद्धान्त जानना तथा उसे कार्य रूप में ढालना, दोनों में आकाश, पाताल का अन्तर है। सृष्टि में मानव जीवन तो परमात्मा की सबसे खूबसूरत उपहार एवं कृति है, इसे ईश्वर ने बखूबी जीने, संतुष्ट रहने एवं आनन्द के लिए प्रदत्त किया गया है तथा उसके लिए तौर-तरीके भी विभिन्न स्त्रोतों से बताया गया है।

आज के दौर में हम प्रतिदिन देखते हैं कि मठों, मन्दिरों में, तथाकथित ढोंगियों के यहाँ धर्मपरायण भोली-भाली जनता का दोहन हो जाता है एवं लोग सहज ही विश्वास कर बैठते हैं। एक अंध आस्था जुड़ जाती है एवं उनके प्रति श्रद्धावान भी बन जाते हैं तथा जब तक असलियत का पता चलता है तब तक वे बहुत कुछ समय, पैसा गवाँ चुके होते हैं तथा हाथ मलते रह जाते हैं। यह इसलिए कि हम अपने अर्न्तआत्मा से बिना राय लिए ही अपने दिमाग को चलाकर या अंधानुकरण कर एक रायसुमारी बैठा लेते हैं तथा चल पड़ते हैं उस दिव्य आभूषण की प्राप्ति हेतु जो केवल सच्चे जौहरी के पास ही उपलब्ध होता है, जबकि देखने में वह नकली आभूषण असली से अधिक चमक, दमक रखता है तथा उसे ऐसा जामा पहनाया

शेष पृष्ठ तीन पर

शोक संदेश

बड़े ही दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान, क्रींकुण्ड, वाराणसी के सक्रिय सदस्य श्री गंगेश पाण्डेय, एडवोकेट के पूज्य पिताजी दयानारायण पाण्डेय निवासी ग्राम-बरईपुर, सारनाथ, वाराणसी का निधन विगत दिनांक 23.11.2014 दिन रविवार को हो गया। शिवलोकवासी पाण्डेय जी ने पूज्य बड़े सरकार के सानिध्य में लम्बे समय तक रहकर कई पुस्तकों का लेखन कार्य भी सम्पादित किया था। अघोराचार्य बाबा कीनाराम अघोर शोध एवं सेवा संस्थान की ओर से दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु प्रार्थना सभा आयोजित की गई।

राम नाम की महिमा

पिछले अंक का शेष

साधना के प्रभाव से स्थूल देह के पाँचों तत्त्व जब तारक में लीन हो जाते हैं, तब सूक्ष्म-देह के पाँचों तत्त्वों को नाम के दूसरे अवयव 'दण्डक' में लीन करना पड़ता है। इधर पूर्वोक्त तारक भी स्थूल तत्त्वों को अपने अन्दर लेकर 'दण्डक' में लीन करना पड़ता है। इधर पूर्वोक्त तारक भी स्थूल तत्त्वों को अपने अन्दर लेकर 'दण्डक' में लीन हो जाता है। इसके कारण-देह के 'तत्त्व' नाम के तीसरे अवयव 'कुण्डल' में लीन हो जाते हैं, साथ ही दण्डक भी कुण्डल में लीन हो जाता है। कारणदेह की निवृत्ति के पश्चात् शुद्ध सत्त्वमय महाकारण-देह को नाम के चतुर्थ अवयव 'अर्धचन्द्र में लीन करना पड़ता है। महाकारण-देह तक जड़ का ही खेल समझना चाहिये। हाँ, महाकारण देह जड़ होने पर भी शुद्ध है; परन्तु स्थूल, सूक्ष्म और कारण जड़ एवं अशुद्ध हैं। महाकारण देह के अर्धचन्द्र में लीन होने के कारण कैवल्य देह मात्र बचा रहता है। यह विशुद्ध चित्-स्वरूप और जड़ सम्बन्ध से रहित है। अर्धचन्द्र के बाद पाँचवाँ अवयव या कला बिन्दु रूप से प्रसिद्ध है। बिन्दु पराशक्ति श्रीजानकी की का स्वरूप है। बिन्दुरूपा श्रीजानकी जी का आश्रय लिये बिना कालातीत श्री राघव का संधान नहीं मिल सकता। बिन्दु के अतीत रेफ ही परब्रह्म श्रीरामचन्द्र हैं। बिन्दुरूपिणी सीताजी और रेफरूपी श्रीरामचन्द्रजी में दृढ़ अनुराग जब अचल हो जाता है, तब भव-बन्धन से मुक्ति मिल जाती है। तभी सिद्ध पञ्चरसों का आस्वादन हो सकता है, इससे पहले नहीं। शान्त-रस के रसिक प्रह्लाद आदि, दास्य के हनूमान् आदि, संख्य के सुग्रीव-विभाषणादि, वात्सल्य के दशरथ आदि और शृङ्गार-रस के मूर्त-स्वरूप जनकपुर की युवतियाँ—विशेषतः श्रीजानकीजी स्वयं हैं।

कैवल्य-देह में चित्-तत्त्व का स्फुरण वर्तमान है। उसके बाद तत्त्वातीत ब्रह्म वस्तु है, जो शक्तिरूप में श्रीजानकीजी के नाम से और शक्ति के आश्रयरूप से श्रीराम के नाम से भक्तों के लिये सुपरिचित है। महाबीरजी ने जो उपदेश दिया है, उसका तात्पर्य यही है बिन्दु का आश्रय लिये बिना निष्कल परब्रह्म की ओर अग्रसर नहीं हुआ जा सकता। अन्यथा प्रयत्न से बड़े अनर्थ की सम्भावना है।

संतों की पहचान

द्वितीय पृष्ठ का शेष

जाता है कि वह हूबहू असली ही लगे, परन्तु खराद या कसौटी पर कसते ही उसकी तत्काल पहचान हो जाती है। क्योंकि पाखण्डी या ढोंगी बहुत बड़ा कलाकार होता है, वह नाना प्रकार के ज्ञान से आपको प्रभावित करने या बनाने की क्षमता रखता है, थोड़े समय, काल के लिये उसकी जादूगरी में हम आप फँस जाते हैं। साथ ही उसका किताबी ज्ञान उसके दिमाग का करतब उसे अपनी योजना में सफल बना देता है इसी भारतवर्ष में सिद्ध हो चुका है कि बीस-बीस चालीस-चालीस वर्षों से तथाकथित कुछ दाढ़ी वाले कुछ बिना दाढ़ी वाले पारंगत ठग कैसे अध्यात्म के छाँव तले अपना उल्लू सीधा करते रहे हैं तथा उनके आश्रमों में कैसे कैसे करतब किया जाता रहा है, क्योंकि अध्यात्म की डिग्री भी किसी विश्वविद्यालय में नहीं बँटती, न तो इसका कोई मापन ही है। परन्तु जितना सटिक इसका मापन है किसी अन्य का नहीं, जैसे उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि हमें अपने सगे सम्बन्धी आदि के बारे में बचपन से ही जानकारी रहती है, हम उन्हें अपनाने में जरा भी संकोच इसलिये नहीं करते कि पारम्परिक तौर पर, पुश्तैनी जुड़े हुए हैं, इसी प्रकार हमें यह देखना चाहिए कि अपनी परम्परा का संवाहक प्रश्नगत गुरु या उनका स्थान नहीं रहा है तो फिर तो थोड़ा सम्हलना पड़ेगा, छानबीन करनी पड़ेगी क्योंकि जिस पुराने विद्यालय या उसकी शाखा या पढ़ाई से आपके पूर्वज गुजर चुके हो तो उन्हें अपनाने में कोई हर्ज नहीं है लेकिन नित नये-नये खुलते विद्यालय जो विशुद्ध रूप से व्यवसायियों, माफियाओं के हैं, उनमें भी शिक्षा बड़े करीने से दी जाती है, परन्तु उस शिक्षा की जड़ में संस्कार के जल का नितान्त अभाव रहता है क्योंकि स्कूल के संस्थापकों का मुख्य ध्येय शिक्षा न होकर धनार्जन हो गया है। उसी प्रकार ये तथाकथित संत रूपी बहुरूपियों की भावना जनकल्याण न होकर जनघाती है। अल्प समय में वे अपने साधारण स्थिति से अरबों, खरबों की दौलत बटोर कर अध्यात्म की आड़ में ऐय्याशी का मनभावन साधन खोज लेते हैं। ऐसे में केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार का दायित्व है कि ऐसे मामलों में समयबद्ध मुकदमा चलाकर जनता के लिये, जनता के हित में उन्हें दण्डित किया जाय, जिससे ऐसे निरंकुश अफलातूनों के द्वारा बिछाये गये जाल में जनता-जनार्दन का एक हिस्सा कुप्रभावित न हो सके साथ ही साथ जनता को भी जागरूक कराने का कार्य स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा पूरी निष्ठा से किया जाना चाहिए, ताकि अकारण भ्रम जाल में पड़कर फर्जी एवं नकली कबीरपंथियों, सनातनधर्मियों से आम जन की रक्षा हो सके।

जनसाधारण के लिए भी इस सूत्र का प्रयोग कर लेना बड़ा ही आवश्यक है, इसका बड़ा ही सीधा सदा फार्मूला है जिसे आप अपनाकर असली नकली सन्तों की पहचान कर सकते हैं, बस जरूरत है तो अपने विवेक के ईमानदारी से इस्तेमाल की जैसे किसी गुरुद्वारा या सच्चे संत, दिव्य आत्मा के पास से उत्सर्जित होने वाली विकरित किरणें आप पर ऐसा प्रभाव डालेगी कि अन्दर से एक स्पन्दन उत्पन्न होगा या आपको तत्क्षण शान्ति मिलेगी जैसे कि धूप से लथपथ मुसाफिर को किसी घने वृक्ष की शीतल छाया मिल गई हो तथा वहाँ वह थोड़ी देर आराम करने की मुद्रा में लेट जाता हो। फिर वह अधिक ऊर्जा प्राप्त कर एक ताजगी से भर जाता है, उसे एक अलौकिक स्थायी शान्ति की प्राप्ति होती है जो उसके लिए अविस्मरणीय बन जाती है व्यक्ति को यह अनुभव होने लगता है कि वास्तव में यहीं वह ठौर है जिसे वह खोज भी रहा था पुनश्च खुद बखुद वह हमेशा के लिए उस स्थान या दिव्य आत्मा के सम्मुख होना चाहता है ताकि उसे सुख शान्ति, संतोष मिले फलस्वरूप मान, प्रतिष्ठा समाज से मिलती रहे तथा उससे ऐसी कोई त्रुटि (गलती) न हो जिससे उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा धूल-धूसरित हो।

अपने मनपसन्द सच्चे गुरु द्वारा गुरु को अपनाने का पहचान करने का तरीका प्रत्येक व्यक्ति के अन्तर्रात्मा से ही प्रस्फुटित होता है उसके हृदय की विवेकी ध्वनि को उसे बस सुनने एवं गुनने की आवश्यक होती है, यह कहना कि अमुक पंथ, अमुक धर्म, अमुक सम्प्रदाय ऐसा है, बेमानी होगा, जैसे प्रत्येक देशों में अलग-अलग मुद्रायें प्रचलित हैं, भारत में रुपया, बंगला देश में टका, जापान में येन, अमेरिका में डालर आदि आदि विभिन्न नामों से चलती हैं परन्तु ध्येय सबका ही एक है। यह निर्विवाद सत्य है कि सभी सच्चे संतों ने समाज के उत्थान के लिए मानव के कल्याण के लिये ही अथक परिश्रम कर सूत्रों को अवधारित किया है, परन्तु जैसे किसी उत्पाद पर लिख दिया जाता है कि "नक्कालों से सावधान" वैसे ही सतर्कता अध्यात्म के ग्राहकों को भी बरतनी पड़ती है अन्यथा यदि किसी ने व्यवहार में आपको किसी वस्तु के बदले नकली नोटों का बंडल दे दिया जो बिल्कुल प्रथम दृष्ट्या असली जैसा ही हो तो वह आपको राष्ट्रद्रोह जैसे जघन्य दोष से युक्त कर देगा, अद्यपि निर्दोष ग्राहक का बस यही दोष है कि उसने भलीभाँति जाँचे परखे बिना ही समूल स्वीकार कर लिया। आपकी हमारी कम सतर्कता या नासमझी भी हमें गर्त में ढकेल सकती है, इसीलिये देशी कहावत भी है कि "पानी पीओ छान के एवं गुरु बनाओ जानके" भारतवर्ष वैसे भी धर्मक्षेत्र रहा है विश्व के आबादी को प्राचीन काल से ही आर्यावर्त के इस भूभाग एवं क्षेत्र में ऋषियों, महर्षियों, साधु-संतों की विस्मयकारी चमत्कारों, कार्यों का भान होता रहा है, ईसा पूर्व विश्व विजेता सिकन्दर जब विजयी बन भारत से लौटने की तैयारी कर रहा था तो उसके यूनानी गुरु ने उसे भारत के एक संत को साथ ले आने की गुरु भेंट माँगी थी। फलस्वरूप तत्कालीन प्रखर संत दण्डायन ऋषि के समक्ष सिकन्दर के सैनिकों ने जाकर अनुरोध किया। दण्डायन ऋषि के इनकार करने पर सिकन्दर स्वयं ही उपस्थित होकर ऋषि से यूनान चलने की याचना की एवं एवज में सम्राट से उनकी कुछ भी इच्छा पूर्ण करने का प्रस्ताव भी दिया, दण्डायन ऋषि ने बिना किसी झिझक के सिकन्दर को डाँटने की मुद्रा में कहा कि- "पहले सामने से हटो, सूर्य की आती हुई धूप भी रोककर खड़े हो" सिकन्दर को समझते देर न लगी कि ऋषि के इच्छा की पूर्ति करना उसके वश की बात नहीं थी और साष्टांग किया तथा ऋषि ने उससे यह भी कहा कि वह यूनान नहीं पहुँच पायेगा, हुआ भी वही रास्ते मे ही विश्व का महान विजेता कालकलवित हो गया। कहने का तात्पर्य यह है कि भारत की उर्वरा भूमि में देशी गाय का शुद्ध दूध आज भी उपलब्ध है, अद्यपि यह भी एक तथ्य है कि दूध की आवश्यकता को देखते हुए विदेशों से भी दुग्ध पावडर पैक डब्बों में भरकर बाजार में उपलब्ध है। साथ ही सिंथेटिक दूध, पनीर का भी लाइसेंस सरकार द्वारा निर्गत किया जा रहा है, एवं मिलावट के कारोबारी दूध से लेकर दवाईयों तक में बड़े ही धड़ल्ले से मिलावट कर आम जनता को धोखा देकर बेशुमार दौलत के स्वामी बन बैठे हैं, जबकि देशी गायों की संख्या दिन पर दिन घटती जा रही है, उन्हे खिलाने के लिये शुद्ध चारा का भी अभाव होता जा रहा है, रासायनिक खाद से परिपूर्ण चारा ही उनका भी आहार है, ठीक उसी तरह हमारी इस भारतभूमि में वर्तमान में नकली धर्मगुरुओं, कबीर पंथियों, पोंगा पंथियों की बाढ़ आ गई है तथा उत्पाद की तरह उनकी मार्केटिंग भी टी0वी0 चैनलों के माध्यम से बखूबी प्रदर्शित किया जा रहा है, जिससे आजकल की भागदौड़, उहापोह, संघर्षमय जीवन यापन करने वाले मनुष्य जब भी एक प्राकृतिक आनन्द के लिए अध्यात्म की ओर झाँकते हैं तो उनके हाथ अफसोस ही आता है।

उपरोक्त स्थिति से जनसामान्य को अवगत कराने के लिये बीसवीं सदी के मूर्धन्य संत परम पूज्य अवधूत भगवान रामजी द्वारा प्रतिपादित "अघोर वचन शास्त्र" अपने में एक पूर्ण ग्रन्थ हैं उसमें सारे वेद, वेदान्त, पुराणों, स्मृतियों का सार संक्षेप एवं निचोड़ है। उक्त महाकाव्य के अन्तर्गत समाज में स्थिरता बढ़ाने भाईचारा बनाये रखने एवं सच्चे साधु संत एवं गुरु की पहचान बड़े ही स्पष्ट शब्दों में अवधारित की गयी है। इस पुस्तक के विभिन्न अध्यायों में गुरु अध्याय का परायण करने से ही समस्त शंकायें, उहापोह एवं भ्रम का निवारण हो जाता है।

अतः इस युग में सच्चे संत की कैसे पहचान की जाय। इसके लिए आवश्यक है कि पढ़े लिखे समाज के पुरोधा, विवेकी एवं सामान्य जन को अवगत कराने के लिये बीसवीं सदी के संत सम्राट परम पूज्य अवधूत भगवान राम जी द्वारा प्रतिपादित पुस्तक **"अघोर वचन शास्त्र"** का न केवल नियमित अध्ययन करें बल्कि मनन करें एवं कार्य रूप में परिणित भी करे, साथ ही शिक्षा जगत के विद्यालयों, विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में इसे शामिल भी किया जाय ताकि पढ़ने वाले नौनिहालों, बालक-बालिकाओं, छात्र-छात्राओं में भी इसका स्वरूप चिर स्थायी रूप से हो सके तथा वे अपने भावी जीवन में इसका लाभ उठा सके जैसे सन्त प्रवर तुलसीदास जी ने जनता की स्थिति को भाँपकर अवधी मिश्रित सरल भाषा में रामचरितमानस की रचना की है। अघोर वचन शास्त्र एक ऐसा जीता जागता सूत्रों का समुच्य है जिसके पढ़ने एवं नित्य मनन करने से व्यक्ति न केवल आध्यात्मिक सद् प्रकाश पाता है बल्कि जीवन के किसी भी क्षेत्र में असफल या निराश नहीं होता। आवश्यकता है भली प्रकार से श्रद्धा सहित सूक्तियों को जीवन में अपनाया जाय। ध्यातव्य है कि यह पुस्तक क्रींकुण्ड स्थल, शिवाला, वाराणसी के अघोर साहित्य केन्द्र पर जनसाधारण के लिये उपलब्ध है। जिसमें गुरु या संत की शारीरिक बनावट, बोलचाल, उठने बैठने, चलने के भाव का विवरण दिया गया है। जिससे प्रथम दृष्ट्या छद्म व्यक्तियों की बड़े ही सरलता से पहचान की जा सकती है।

इसके बावजूद अगर हम वास्तविकता से आँख बंद रखें, दिल दिमाग का ईमानदारी से सदुपयोग न करें एवं अंधानुकरण कर शीघ्रातिशीघ्र अध्यात्मिक फल की आशा करें तो वैसा ही कुफल प्राप्त होगा, जैसा कि आज कल आये दिन समाचार-पत्रों, टी0वी0 चैनलों पर प्रसारित एवं प्रदर्शित किया जा रहा है। इसके साथ ही उक्त अघोर वचन शास्त्र में सच्चे शिष्यों, अनुयायियों के भी निष्ठा, लगन एवं उनके कर्त्तव्यों का निरूपण किया गया है जो वर्तमान समय में समाज के लिये सच्चा मार्गदर्शक एवं संदेह के निवारण का यंत्र कहा जा सकता है। इसीलिये संत प्रवर ने बड़े ही बोधगम्य एवं सरल सुबोध भाषा में इसके अध्यायों के अन्तर्गत विभिन्न विषयों पर प्रकाश डाला है जिसमें किसी विशेष विद्वता, दर्शन अथवा निर्वचन की आवश्यकता नहीं है। जिसका लाभ हम सबको उठाना चाहिये।

हर हर महादेव

मनुष्य कब बनोगे?

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी का आशीर्वचन

धर्म बन्धुओं!

धर्म हमारी रक्षा करता है, हम धर्म की रक्षा नहीं करते यह सही बात है। किला के चारों तरफ गड्ढा किला की रक्षा है और किला राजा की रक्षा करता है। आपने प्रश्न करते हुए कहा कि हमारा सुबह का धर्म क्या है, शाम का धर्म क्या है, रात का धर्म क्या है? माता के सामने क्या धर्म है, माता के सामने क्या धर्म है, पिता के सामने क्या धर्म है, बहन, भाई बन्धुओं, कुटुम्बियों, मित्रों के सामने क्या धर्म है? चोरी भी धर्म है, घूसखोरी भी धर्म है, पाप भी धर्म है, पुण्य भी धर्म है क्या? वही धर्म है जो हमें प्रसन्न रखें, हमें खुश रहे जो समाज में सम्मान, प्यार, आदर दें, जिसे हम बन्धु-बान्धव कुटुम्ब रखे जो समाज में सम्मान, प्यार, आदर दें, जिसे हम बन्धु-बान्धव कुटुम्ब परिवार में बहुत कुछ स्नेह आदर, प्यार प्राप्त कर सके। वह धर्म नहीं जिससे हमारा भी मन कलुषित रहे, दूसरे का भी मन कलुषित हो।

आपने 'महाजनों जेन गत: स पन्था:' का संदर्भ देते हुए कहा कि वैसे गुरुजनों का आचरण हमारे लिये योग्य नहीं हो सकता जैसे गिद्ध, गनिका, अजामिल और श्रीकृष्ण। उनका आचरण उसी समय के लिये था। हम उनको आदर देते हैं, स्नेह प्यार दे सकते हैं पर उनका उपदेश रूपी आचरण आदरणीय नहीं है। समाज उसे आज सम्मान नहीं देगा। इन लोगों के मार्ग पर हम भी चलते रहें तो हमारी भी मनोस्थिति वैसी ही हो सकती है जैसा कि किसी गुरुवर देश के प्राणियों और समाज की होती है। राम के गोद में बैठकर हम गिद्ध का आचरण नहीं कर सकते। हमारे बहुत से गुरुजन जो शिक्षण संस्थाओं में हों या अन्य संस्थाओं में हो, उनके बहुत से आचरण जो संगीन हो, वे हमारे लिये नहीं हो सकते। यदि हम ऐसा करते हैं तो हमारा भी मनोदशा वैसी होगी और फिर हम उस वाक्य को चरितार्थ नहीं कर सकते जो तुलसीकृत रामायण में है "बड़े भाग्य मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ सद्ग्रन्थन गावा" देवता को जो दुर्लभ है जिस शरीर के लिये देवता तरसते हैं, ऐसे मनुष्य की योनि में हम जन्म लिये, मनुष्य हैं। इनमें इतना बड़ा अधिकार होता है, आप सुन चुके होंगे "एक बार त्रेतायुग माहीं, शम्भु गये कुम्भज ऋषि पाहीं संग सती जग जननी भवानी। 'देवता ब्रह्मा, विष्णु, महेश सत्संग करने के लिये ऋषियों मुनियों के यहाँ जाते थे। सज्जनों से सम्पर्क करते थे। उनके गुणों और आदर्शों से प्रभावित होते थे। हम उन्हें नहीं ढूँढ़ने जाते थे, हमारे मुनि उन्हें नहीं ढूँढ़ने नहीं जाते थे। जो मनुष्य का तन पाया है जिसमें मानवीय गुण हैं, वह व्यक्ति देवताओं का भी बहिष्कार कर सकता है। उनकी भी अनदेखी कर सकता है क्योंकि वे तो बहुत लोलुप होता हैं। यदि हमें यहीं याददाश्त बनी रहे और हम इसी याददाश्त पर दृढ़ रहे तो आशा है, हमसे कोई गलत कार्य कभी नहीं बन पायेगा।

आपने मनुष्य जीवन के संदर्भ में आगे कहा चोर-चोर के साथ, शराबी-शराबी के साथ सुख भोगता है। साधु को साधु के साथ, सज्जन को सज्जन के साथ अच्छा लगता है। सभी प्राणियों के शरीर से एक आभा, एक लहर एक तरंग निकलती रहती है। यदि हम गलत मनुष्यों के साथ रहते हैं, बात करते हैं तो उसकी तरंगे जरूर हमें उत्साहित करती हैं तो कहना ही क्या है। हम लोग तो बहुत ज्यादा से ज्यादा विशेष से विशेष अपना मापदण्ड बनाते है तो किसी व्यापारी, किसी एम०एल०ए०, किसी ऐसे पंडित, चोर चाई, बदमाश, लोफर के मापदण्ड से अपने को तौलते है। ऐसे लोगों के मापदण्ड से अपने को तौलते हैं। ऐसे लोगों के मापदण्ड से तौलेंगे तो हमारा वजन उतना ही उन्हीं के सरीखे होगा।

महान पुरुष जो सेवा में रत हैं, प्राणियों के प्रति जिनमें करुणा है, प्राणियों के प्रति जिसमें दया की भावना है। वैसी दया नहीं जो किसी को कुछ देकर धोखा दिया जाय। वैसी दया जिसमें न्याय हो। ऐसी यदि हमारी भावनायें हैं तो हम एक अच्छे से अच्छे जो मनुष्य की श्रेणी है, मनुष्य की गति है, वहाँ तक पहुँच पायेंगे। जब वहाँ तक हम पहुँच जायेंगे तो हमारी दृष्टि में जो धर्म के बारे में संकुचित विचारधारा है, वह बिल्कुल टूट जायेगी। कोई मुसलमान है या ईसाई या हिन्दू है उसकी जो अपनी परिधि के बाहर के लोगों को समझता है कि जीने के काबिल नहीं है, कुछ नहीं हैं। ऐसी जिनकी मनोवृत्ति है, वह धर्म हो ही नहीं सकता। ऐसी जिनके विचारधारा है, वही एक दूसरे के खून के प्यासे रहते हैं, खून बहाते रहते हैं। हमारे भारतीय सैनिक भी उतना खून नहीं बहाते होंगे जितना ये लोग हर साल बहाते हैं।

धर्म तो एक बड़ी ही अजीब सी वस्तु है। एक दूसरे के साथ कितना स्नेह, प्यार की वस्तु है। क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र, हिन्दू, मुसलमान, ईसाई तो सब बन जाते हैं, नेता, पण्डित, साधु, बाबा भी बन सकते हैं मगर मनुष्य कब बनेंगे। जिस दिन मनुष्य बन जायेंगे तो यह सब समाप्त हो जायेगा।

जाति, धर्म की भेद भावना को समाप्त कर आवश्यकमन्द लोगों को सहयोग देने की आवश्यकता पर बल देते हुए आपने प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी की सराहना की और इस संदर्भ में मुर्गा, पक्षी का उदाहरण देते हुए कहा कि वह सुबह उठता है और बाग देता है, उसका सारा परिवार जग जाता है, वह फिर बाग देता है, जब उसका सब परिवार इकट्ठा हो जाता है, तब वह अपना चोंच मारता हैं। सबको खिलाकर वह खाता है। इसी तरह वह भी राष्ट्र के लिये, समाज के लिये चिन्तन करती है कि कैसे इन सबको रोटी और वस्त्र मिले, कैसे सबको शान्ति मिले, कैसे ये मनुष्य बने। इसके लिये किसको हटावे, किसको बनावे। इस पर दूसरा ही अर्थ लगा लिया गया। वह बात है नहीं।

आपने कहा कि यहाँ ऐसे भी मनुष्य हैं जिनके भाई बन्धु, माता, पिता वस्त्रहीन हैं। फटे पुराने पहने हैं और हम कैसे वस्त्र पहनकर घूमते हैं। हमारी जो मनोवृत्ति है, इसका कोई समाधान ही नहीं। आपने सलाह देते हुए कहा कि हर आदमी को श्रम और संचय करना चाहिये। जो श्रम और संचय करता हैं, उसके माता-पिता, भाई-बन्धु, स्त्री-बच्चे प्यार देते हैं, आदर करते हैं, सम्मान देते हैं। जो श्रम और संचय नहीं करता हैं, उसके माता-पिता, भाई-बन्धु, कुटुम्ब, स्त्री, बच्चे निरादर करते हैं, बहुत अपशब्द बोलते हैं, ताड़ना देते हैं, हम भले ही अपने लिये कुछ नहीं करते हैं पर राष्ट्र के लिये, देश के लिये करते हैं तो यह मामूली तपस्या नहीं है। हम राष्ट्र से नत्थी हैं। शहर में पानी का नल नहीं खुला है, हम देखते हैं तो समझ लेना चाहिये कि हम सभी का, हमारे राष्ट्र का नुकसान हो रहा है। इसमें हम सभी का अंश लगा हैं किसी न किसी रूप में इसे देना होगा। आप किसी चीज का नुकसान करते हैं चाहे वह सामाजिक सम्पत्ति हैं या अपने घर परिवार की है तो वह राष्ट्र की क्षति हैं। राष्ट्र हम किसे कहते हैं? यही महाभगवती अपनी भारत माता जो इसकी समस्याओं से घिरा हुआ वातावरण हैं, उसी को राष्ट्र कहते हैं।

राष्ट्र संदर्भ में आपने आगे कहा कि हमारे नौजवान लोग जब स्वस्थ सबल रहेंगे, उनका मन मस्तिष्क स्थिर रहेगा तो किसी बात को समझाने करने में समझ सकते हैं। जब हमें किसी बड़े आदमी से मिलना होता है तो सतर्क हो जाते हैं, बड़े नियंत्रण ढंग से उनसे वार्तालाप करते हैं, उच्छृंखलता बिल्कुल चली जाती है। यह बातें हमारे नवयुवकों में कैसे आ जाय? जो वीर्य की रक्षा करता है, जो वीर्य का संचय करता है, जो वीर्य का आदर करता है, जो वीर्य को प्यार करता है, जो वीर्य को संजोता है, वह स्वस्थ होता है, सबल होता है, उसका मस्तक ऊँचा रहता है, वह बुद्धिमान् होता है, उसकी हर कमजोरियाँ दूर होती है। जो उसका अपव्यय करता है, जो वीर्य को नष्ट करता है, वह अस्वस्थ होता है, रोगी होता है कलुषित होता है, घृणित होता है, समाज में मुँह दिखाने लायक नहीं रहता नतमस्तक होता है। इसके लिये संयम है, सीमा है, उसको तोड़ते है तो विकृति पैदा होगी, आप अस्वस्थ होंगे। आप किसी भी बात को समझ नहीं पायेंगे। आप हर तरह की कमी पायेंगे। प्रोफेसर साहब या वाइसचांसलर साहब अपने बेटे को कमायी हुई सम्पत्ति दे सकते हैं पर जो शिक्षा पाये हैं, उसे नहीं दे सकते? उसके लिये स्वयं प्रयत्न करेंगे, तभी मिलेगा। कैसे प्रयत्न करेगा? कोई आदमी दो मिनट अपने पास नहीं ठहरना चाहता। दो मिनट भी ठहर जाय तो गुरु जी की भी बात याद हो जाय, प्रोफेसर की भी बात याद रहे। जो सुबह चलता है, जो बराबर चलता है, उसे न भगवान मिल सकते न भगवती मिल सकती हैं न उनका विचार मिल सकता है, उनके जीवन में बराबर असफलता ही असफलता रहती है। भले वह किसी तरह डिग्री प्राप्त कर लें, पर उसकी वो योग्यता बिल्कुल नहीं रहती है।

शेष अगले अंक में

अघोर सूत्र

- वह व्यक्ति चाहे कितना भी धार्मिक हो पर यदि वह भारतीय वेशभूषा पहनने में और रूखा सूखा भोजन करने में शर्माता हो तो वह सभा में बुलाने योग्य नहीं होता है।
- जो युवक अपने बड़े का सम्मान नहीं करता है, वह अपने लिए खतरे की घंटी है।
- हमें अपने नवयुवकों को उत्साहित करना चाहिए, उन्हें अपने देश का इतिहास बतलाना होगा।

अघोरेश्वर महाप्रभु बाबा भगवान रामजी